5. खुर बढ़े पशुओं का चयन प्रजनन उद्देश्यों हेतु नहीं करना चाहिए।
6. पशु के खुरों का भी अवलोकन करते रहना चाहिए तथा बढ़ा हुआ प्रतीत होने पर तत्काल पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिये।
7. पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिये।
8. पशु बाड़े की नियमित साफ–सफाई कराते रहना चाहिये।
9. पशुओं के खुर को कीटाणुनाशक से उपचारित कराते रहना चाहिये।
10. साफ–सुथरे चारागाहों में ही चराई हेतु पशुओं को भेजें।
11. पशुओं को कच्चे–पक्के दोनों स्थानों पर चलाते–फिराते रहना चाहिये।

इस प्रकार बचाव व रोकथाम के उपायों को अपनाने से पशुओं में बढ़ते खुर अथवा खुर बढ़ने की समस्या को नियन्त्रित किया जा सकता है, तथा पशु द्वारा अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

खुर काटने के विभिन्न औजार

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा
योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा
दीप नारायण सिंह, विभागाध्यक्ष, पशुधन प्रक्षेत्र परिसर

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/ 70/2026/DEE/BASU-Patna

पशुओं के खुर की उचित देखभाल एवं प्रबन्धन

आलेख:

दीप नारायण सिंह, रंजना सिन्हा, योगेन्द्र सिंह जादौन,
सुचित कुमार एवं मनमोहन कुमार

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

पशुओं के खुर की उचित देखभाल एवं प्रबन्धन

खुर पशुओं के शरीर का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है, जो पशु की चाल–ढाल एवं कार्य क्षमता को नियंत्रित करती है। पशुओं में खुर का बढ़ना एक सतत् एवं सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो सभी खुरधारी पशुओं में पायी जाती है। जो पशु हमेशा चलते–फिरते रहते हैं, उनके खुर स्वतः ही धीरे–धीरे घिसते रहते हैं, फलस्वरूप उनके खुर अपने उचित आकार में बने रहते हैं। परन्तु दिन–प्रतिदिन निरन्तर घटते चारागाह, चारागाहों की अनुपलब्धता, असंतुलित पशुपालन, कम जगह में ज्यादा पशुओं को बांध कर खिलाने–पिलाने के कारण पशु का खुर बढ़ जाता है। साथ ही पशुओं के खुरों की उचित देखभाल नही होने एवं एक निश्चित समयान्तराल पर कटाई–छटाई के आभाव में पशु चलने–फिरने, हरी घास खाने में धीरे–धीरे असमर्थ होने लगता है। जिससे पशु के स्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फलस्वरूप पशु का उत्पादन, पाचन एवं प्रजनन कार्य भी प्रभावित होता है। यह समस्या छोटे पशुओं बकरी से लेकर गाय, भैंस, घोड़े एवं गधे में भी पायी जाती है। इस समस्या के कारण पशुपालकों को भारी आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है।

खुरों का अत्यधिक बढ़ने के दो प्रमुख कारण है –

1. लम्बे समय तक पशु को एक ही स्थान पर बधें रहने के कारण समुचित घिसावट के आभाव में निरन्तर बढ़ते रहते हैं।

2. प्राकृतिक कारणः कभी–कभी प्राकृतिक कारणों अथवा अनुवांशिक/वंशागत गुणों के हस्तान्तरण या शारीरिक विकृति इत्यादि के कारणों से भी पशुओं के खुर में तीव्र वृद्धि देखने को मिलती है, जिससे पशु के खुर सामान्य की अपेक्षा अधिक बढ़ जाते है।

उपरोक्त दोनो कारणों के अतिरिक्त कभी–कभी अन्य कारणों से भी खुर में वृद्धि देखने को मिलती है।

(क) उम्र ज्यादा होने के कारण भी खुर बढ़ते है।

(ख) कैल्शियम का क्षरण अधिक होने से भी पशुओं के खुर में वृद्धि देखी जाती है।

(ग) पशु जब अत्यधिक कमजोर हो जाता है तब भी खुर बढ़ जाता है।

(घ) जीवाणुजनित बीमारी जो कि गंदे बाड़ों में चराई के दौरान पशु के खुरों में लगती है। उसके कारण भी खुर असमान्य हो जाते है।

(ड़) जब पशु चलने फिरने में असमर्थ हो जाता है तब भी खुर के अत्यधिक बढ़ने की संभावना रहती है।

(च) असंतुलित आहार खिलाने एवं खनिज लवणों की कमी से भी खुर असामान्य हो जाते हैं।

खुर बढ़ने के लक्षण

1. पशु के खुर बढ़े हुए दिखते है एवं पशु लंगड़ा कर चलता है।
2. पशु जब चलने की कोशिश करता है तो खुर के अत्यधिक बढ़े होने के कारण बार–बार पशु को ठोकर लगती रहती है। अतः पशु घुटनों के बल अथवा बढ़े हुए खुर के पैर को मोड़ कर चलने का प्रयास करता है।
3. खुर बढ़े पैर का प्रयोग, पशु चलने फिरने में कम करता है।
4. पशु चलने–फिरने से परहेज करता है।
5. पशु का खुराक, उत्पादन क्षमता एवं शारीरिक वृद्धि कम हो जाती है।
6. मादा पशु समय से गर्मी में नहीं आती तथा नर पशु प्रजनन के प्रति उदासीन हो जाता है।
7. पशु के बढ़े हुए खुर में ज्यादा चोट अथवा घाव के कारण रक्त का स्राव होता है।

खुर रोगों के लक्षण–

1. पशु का लंगडाना या बार–बार बैठ जाना।
2. खुर से दुर्गंध आना।
3. खुर का गर्म अथवा सूज जाना।

उपचार–पशुओं के खुर की कटाई–छटाई एवं रगड़ाई समय–समय पर किसी कुशल खुर काटने वाले से विभिन्न औजारों के माध्यम से कराते रहना चाहिये। खुर को जीवाणु संक्रमण से बचाने के लिए 5–10 प्रतिशत कॉपर सल्फेट का घोल बनाकर फुट बाथ करायें।

खुर देखभाल की मुख्य बातें–

1. प्रत्येक 20–30 दिनों में खुरों की जांच अवश्य करें।
2. खुर में किसी भी प्रकार की दरार, सूजन, दुर्गंध अथवा चोट पर तुरंत ध्यान दें।
3. इस समस्या से बचाव व रोकथाम हेतु कभी भी पशुओं को लम्बे समय तक एक ही स्थान पर लगातार बांध कर खिलाई–पिलाई से बचे एवं यथा सम्भव पशुओं को समय–समय पर चारागाह अथवा खुले स्थान में भेजते रहना चाहिये।

4. शहरों में अथवा ग्रामीण अंचल में पशुपालन को अपनाने से पूर्व पशु चिकित्सकों एवं पशु वैज्ञानिकों से परामर्श ले लेना चाहिये तथा उनके द्वारा बताये गये सुझाव के अनुसार उपयुक्त प्रजाति के पशु का चयन पशुपालन हेतु करना चाहिए। जैसे–बकरी की बरबरी नस्ल शहरों में बांध कर पालने हेतु सर्वोत्तम है।